दादी की ऑखों का तारा सुरेश

आदीवासी परिवार में जन्मा सुरेश गमेती अपनी माँ का पहला बच्चा है। उसकी माँ को देखकर ऐसा लगता है कि वह खुद ही एक किशोरी बालिका है और कम उम्र में शादी होने व कम उम्र में बच्चा होने की वजह से वो सुरेश की ठीक से देखभाल नहीं कर सकी। देखभाल में कमी के कारण परिवार का पहला बच्चा, वह भी लड़का होने के बावजूद सुरेश अति गंभीर कुपोषित हो गया। *(हमारे देश में लड़कों के मुकाबले लड़कियों में अति गंभीर कुपोषण ज्यादा पाया जाता है क्यों कि लड़कों के खान–पान और देख–रेख पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है।)*

जब पड़ोस की एक बच्ची को आशा सहयोगिनी छगनी मेघवाल द्वारा पोषण कार्यक्रम के लिए चयनित किया जा रहा था तब सुरेश की दादी ने आगे बढ़कर पोषण प्रहरी से पूछा कि वह क्या कर रही है और कुपोषण के बारे में जानकारी मिलने पर सुरेश की दादी नें सुरेश का भी बांह का माप करवा के पोषण प्रहरी से उसका नाम कुपोषित बच्चों की सूची में लिखवाया। इससे पहले भी उसकी दादी उसे कई डॉक्टरों को दिखा चुकी थी और अस्पतालों में इलाज के लिए ले जा चुकी थी। इन सभी कोशिशें के बाद भी सुरेश को कहीं से कोई फायदा नहीं हुआ। पोषण कार्यक्रम में नाम लिखवाकर उसकी दादी अपने द्वारा किये गये प्रयासों की सूची में एक और प्रयास जोड़ रही थी, जैसा कि हर परिवार वाला अपने घर के बच्चों के लिए करता है। लेकिन इस बार इस दादी की उम्मीद टूटी नहीं और पोषण कार्यक्रम ने वो चमत्कार करके दिखाया जो आज तक किसी भी तरह की दवाइयों, जादूटोना, झाड़फूंक न कर सका।

देखते ही देखते दादी की आँखों का तारा तंदरूस्त होने लगा। उसका बढ़ता वजन देख कर दादी की बूढ़ी आँखों में जैसे और चमक आ गई। सुरेश का वजन आठ हफ्ते में 2 किलो 700 ग्राम से बढ़ कर 5 किलो 350 ग्राम हो गया।

आज सुरेश की माँ गीता ये जानती है कि बच्चे को समय – समय पर किस तरह का खाना खिलाना चाहिए। ए.एन. एम और पोषण प्रहरी नें जो बातें उसे बताई हैं वो सब पूरा करने की भरपूर कोशिश करती है। उसने अपने बच्चे को सभी टीके लगवाए हैं।

गाँव वालों ने पोषण कार्यक्रम में ठीक हुए सुरेश और गाँव के और बच्चों को देखते हुए ए.एन.एम मधु से गाँव के और भी बच्चों को इस कार्यक्रम से जोड़ने की बात रखी।